Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAS

सामान्य अध्ययन पेपर-I

भाग-III

प्राचीन भारतीय इतिहास

SIERRA
INNOVATIONS
Private Limited

प्राचीन भारतीय इतिहास

CONTENTS PAGE NO.

CONTENTS	PAGE NO.
•काल क्रम	1
•वैदिक काल	2-15
•महाजनपद काल	16-31
•मौर्य वंश	32-43
•मौर्योत्तर काल	44-50
•गुप्ता काल	51-65
•पुष्यभुति राजवंश	66-74
•चालुक्य चोल राजवंश	75-84
•तुर्क आगमन	85-90
•सल्तनत अवधि	91-121
•लोधी वंश	122-177
•मराठा	178-180
•सिंधु घाटी सभ्यता	181-189

Toppersnotes
Unleash the topper in you

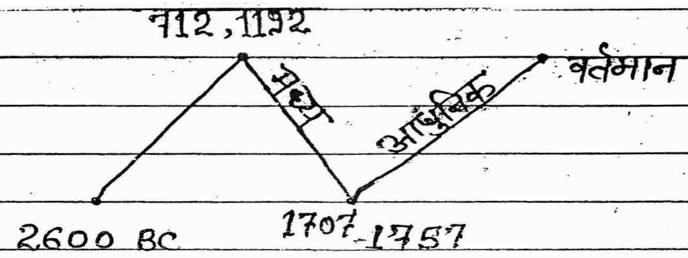

कालक्रम

1.	2600 BC – 1900 BC	सिन्धु घाटी सभ्यता
2.	1900 BC – 1500 BC	– – – – – – –
3.	1500 BC – 1000 BC	ऋग्वैदिक काल
4.	1000 BC – 600 BC	उत्तरवैदिक काल
5.	600 BC – 321 BC	महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6.	321 BC – 184 BC	मौर्य काल
7.	184 BC – 321 AD	मौर्योत्तर काल
8.	319 AD – 550 AD	गुप्तकाल
9.	606 AD – 647 AD	हर्षवर्द्धन
10.	750 AD – 1000 AD	राजपूत काल
11.	1192 (1206) – 1526 AD	सल्तनत काल
12.	1526 AD – 1707 (1858)	मुगल काल
13.	1707 (1757) – वर्तमान	आधुनिक काल

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वैदिक काल (साहित्य)

1500 - 600 B.C.

वेद ⇒ श्रुति
ब्राह्मण ⇒
आरण्यक ⇒
उपनिषद ⇒ वेदान्त

> वैदिक साहित्य

वेदांग
धर्मशास्त्र
महाकाव्य
पुराण
स्मृतियाँ

> वैदिक साहित्य का अंग नहीं है।

वेद

→ वेदों को श्रुति साहित्य भी कहा जाता है। आर्यों को लिपि का ज्ञान नहीं था इसलिए वे इन्हें सुनकर याद रखते थे।
→ वेदों की रचना करने वाले को "दृष्टा" कहते थे।
→ वेदों का संकलन वेदव्यास ने किया।
→ शाब्दिक अर्थ - ज्ञान
→ वेदों को नित्य एवं अपौरुषेय माना जाता है।

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद

> इन्हें "वेदत्रयी" कहते हैं।

ऋग्वेद

→ इसमें 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10552 श्लोक
→ पहला व दसवाँ मण्डल बाद में जोड़ा गया।
→ तीसरे मण्डल में "देवी सूक्त" मिलता है। इसमें गायत्री मंत्र का उल्लेख है। गायत्री मंत्र सावित्री को समर्पित है। गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की थी।
→ सातवें मण्डल में दशराज्ञ युद्ध का उल्लेख मिलता है। भरत कबीला एवं 10 राजाओं के मध्य यह युद्ध हुआ था। भरत कबीले का प्रमुख सुदास था। सुदास ने विश्वामित्र को हटाकर वसिष्ठ को अपना प्रधान पुरोहित बनाया।
यह युद्ध रावी नदी के जल पर अधिकार को लेकर हुआ।
→ नौवां मण्डल - सोम को समर्पित है।
→ दसवें मण्डल में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है।
दसवें मण्डल में 4 वर्णों एवं शूद्र का उल्लेख मिलता है।
→ ऋग्वेद के मंत्र पढ़ने वाले को "होतृ" कहा जाता है।

यजुर्वेद

→ यह 2 भागों - (i) शुक्ल यजुर्वेद
(ii) कृष्ण यजुर्वेद] में है।
→ यह गद्य एवं पद्य दोनों में है।
→ "शून्य" का उल्लेख मिलता है।
→ मंत्र पढ़ने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है।
→ यज्ञ - अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है।

• सामवेद

→ संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत
→ इसके मंत्र ऊंचे स्वर में गाये जाते थे।
→ मंत्र गाने वाले को - उद्‌गाता कहते थे।

• अथर्ववेद

→ अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि - रचयिता
→ अन्य नाम - अथर्वआंगीरस वेद
→ इसमें काले जादू, टोने-टोटको व चिकित्सा का उल्लेख।
→ चाँदी का उल्लेख
→ विविध विषय- औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र-मंत्र आदि

ब्राह्मण साहित्य

ऋग्वेद - 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कौषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

यजुर्वेद - 1. शतपथ ब्राह्मण
2. तैतरेय ब्राह्मण

सामवेद - 1. पंचवीश ब्राह्मण
2. षड्‌वीश ब्राह्मण
3. जैमिनीय ब्राह्मण

अथर्ववेद - 1. गोपथ ब्राह्मण

Toppersnotes
Unleash the topper in you

आरण्यक साहित्य — वनो में

→ रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये ।
→ ज्ञान मार्ग प्रमुख

उपनिषद् साहित्य

→ रहस्यात्मक एवं दार्शनिक ज्ञान रूप में / के स्त्रोत
→ प्रमुख उपनिषद् - ईश, केन, कठ, जाबाल आदि
→ कठोपनिषद् - यम व नचिकेता का संवाद
→ छांदोग्य-उपनिषद - भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख । कृष्ण को आंगीरस का शिष्य बताया गया है। बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त का उल्लेख ।
→ ऐतरेय उपनिषद् - बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग
→ वृहदारण्यक उपनिषद् - याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद
→ जाबालोपनिषद - चार आश्रम

वेद, ब्राह्मण — कर्म मार्ग - जेमिनि - पूर्व मीमांसा दर्शन
प्रभाकर व कुमारिल भट्ट

आरण्यक, उपनिषद् — ज्ञान मार्ग - बादरायण - उत्तर मीमांसा दर्शन
└ ब्रह्मसूत्र
- शंकराचार्य - अद्वैत -
- रामानुज - विशिष्ट अद्वैत
- माध्वाचार्य - द्वैत
- निम्बार्काचार्य - द्वैत-अद्वैत
- वल्लभाचार्य - शुध्द अद्वैत

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वेदांग

1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. व्याकरण
4. छन्द
5. निरुक्त
6. कल्प

शुल्वसूत्र →

→ इसमें यज्ञ वेदिकाओं को नापने का उल्लेख
→ गणित व रेखागणित का प्रथम ग्रन्थ

पुराण →

संख्या – 18
ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया।
→ मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक
इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
→ विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
→ वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
→ मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती)
महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्य ⇒ न्याय ग्रन्थ एवं समाज संचालन

→ **मनु स्मृति :–**
शुंगकाल के दौरान लिखित। (लगभग 2 B.C. में)
यह प्राचीनतम स्मृति है।
टीकाकार – कुल्लक भट्ट, मेधातिथी, गोविन्द राज

→ **याज्ञवल्कय स्मृति :-**

टीकाकार - 1. विश्वरूप
2. विज्ञानेश्वर
3. अपरार्क

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वैदिक काल

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल
(1500 - 1000 BC)	(1000 - 600 BC)

ऋग्वैदिक काल (1500 - 1000 BC)

→ आर्य का शाब्दिक अर्थ - भद्रजन, श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन
→ आर्यों का निवास स्थान -
(i) बाल गंगाधर तिलक - "आर्कटिक होम ऑफ वेदाज" ← पुस्तकें
"गीता रहस्य"
आर्यिऑन / ऑर्योन
इस पुस्तक में उत्तरी ध्रुव को आर्यों का निवास स्थान बताया।

(ii) दयानन्द सरस्वती - तिब्बत को आर्यों का स्थान बताया।
(iii) डॉ. पेन्का - जर्मनी को बताया।
(iv) मेक्स म्युलर - मध्य एशिया - बैक्ट्रिया
↳ सर्वाधिक मान्य मत

- आर्यों का भौगोलिक विस्तार

→ ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है।
→ सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
→ गंगा व सरयू का उल्लेख 1-1 बार "मुजवन्त"
→ यमुना का उल्लेख 3 बार
→ "मुजवन्त" नामक पहाड़ी चोटी का उल्लेख - जो कि हिमालय है।
→ सोम का निवास स्थान - मुजवन्त
→ पंजाब की नदियों का उल्लेख मिलता है।
झेलम - वितस्ता, चिनाब - अस्किनी, सतलज - सतुद्री
व्यास - विपाशा, रावी - पुरुष्णी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

→ अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख

• राजनीतिक स्थिति (जीवन)

→ आर्यों का जीवन 'यायावर जीवन' था।
→ सबसे बड़ी इकाई - जन कहलाती थी। इसका प्रमुख राजा/गोप/गोपस्थ/जनपति कहलाता था। आरम्भ में इसका पद वंशानुगत नहीं था। कालान्तर में वंशानुगत हो गया था। आरम्भ में राजा का पद शक्तिशाली नहीं था।
→ राजा की सहायता के लिए - पुरोहीत होता था।
→ सेनानी का पद भी होता था। स्थायी सेना का अभाव था।
→ स्पश - गुप्तचर
→ विदथ - प्राचीनतम संस्था
→ सभा एवं समिति -
सभा में वरिष्ठ एवं विद्वान लोग होते थे जबकि समिति में जनता के प्रतिनिधि होते थे।

जन — जनपति
⇓
विश — विशपति
⇓
ग्राम — ग्रामणी

→ महिलाऐं भी सभा व समिति में हिस्सा लेती थी।

• आर्थिक जीवन

→ Rajasthan I Point
→ आय का स्त्रोत / प्रमुख पेशा - पशुपालन
→ गाय व घोड़ा - प्रिय पशु
→ कृषि (स्थायी कृषि) नही करते थे। ऋग्वेद में कृषि का उल्लेख 3

बार मिलता है।
→ मुद्रा प्रणाली नहीं। वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार
→ मुद्रा के रूप में गाय व निस्क का प्रयोग।
(प्रारम्भ में आभूषण)
→ अयस शब्द - संभवतः ताँबे या काँसे के लिए। लोहे से परिचित नहीं
→ कपास का उल्लेख नहीं

- सामाजिक जीवन

→ पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
→ समाज 3 वर्णों में विभक्त - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
→ शुद्रो का अस्तित्व नहीं था।
→ ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के पुरुष सूक्त में क्षुद्र शब्द का उल्लेख। लेकिन यह बाद में जोड़ा गया था।
→ वर्णव्यवस्था - कर्म आधारित अर्थात् व्यक्ति वर्ण बदल सकता था।
→ महिलाओं को सभा व समिति में हिस्सा लेने का अधिकार था।
→ ,, ,, शिक्षा का अधिकार था।
→ महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रों की रचना भी की थी।
→ कुछ विदुषी महिलाओं की जानकारी
लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति।ती
→ "विषफला" नामक योद्धा महिला का उल्लेख।
→ जो महिलाएँ अविवाहित होकर अध्ययन करती थी, उन्हें — "अमाजु" कहा जाता था।
→ बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन।
→ विधवा विवाह होता था।
→ सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था।
→ "नियोग प्रथा" का प्रचलन था।
→ दहेज को "वहतु" कहते थे।
→ घरेलू दास होते थे।

बोगजकोई अभिलेख → ऋग्वैदिक काल के देवताओं - इन्द्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य का वर्णन
→ वैदिक आर्य ईरान से आये अनुमान (UPSC)

⊗ ऋग्वेद की अनेक बातें ईरानी भाषा के प्राचीन ग्रन्थ (जेन्द अवेस्ता) से मिलती है।

→ विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, क्षत्रिय भुजाओं से, वैश्य जाँघों से एवं शुद्र पैरों से उत्पन्न हुए हैं।
→ आर्यों के वस्त्र सूत, ऊन एवं चर्म के बने होते हैं।
→ भिषज शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में वैद्य के लिए होता था।

धार्मिक जीवन

→ आर्य बहुदेववाद में आस्था रखते थे। सर्वेश्वरवाद में भी आस्था रखते थे।
→ मूर्तिपूजा नहीं करते थे।
→ मन्दिरों के साक्ष्य नहीं मिलते हैं।
→ सबसे प्रमुख देवता - इन्द्र
ऋग्वेद में 250 बार 'इन्द्र' का उल्लेख है। इन्द्र को "पुरन्दर" कहा।
→ 'अग्नि' दूसरा प्रमुख देवता।
→ अग्नि को मध्यस्थ माना जाता था।
→ वरुण - तीसरा प्रमुख देवता। वरुण को 'ऋत' का संरक्षक माना जाता है।
⊗ **ऋत** → इस जगत की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋत कहा गया है।
→ पुषन - पशुओं के देवता को कहा जाता था। (पूषण)
→ यज्ञ अनुष्ठान होते थे।
→ धार्मिक कर्मकाण्डों का उद्देश्य भौतिक सुखों (पुत्र/पशु) की प्राप्ति करना था।
→ गायत्री मंत्र - ऋग्वेद के तीसरे मंडल में उल्लेख
→ सोम को पेय पदार्थ का देवता माना। ऋग्वेद के 9वें मण्डल में।

प्रा. बहुदेववाद
↓
बहुदेववाद
↓
(हीनोथिज्म) Max Mullar
↓
एकेश्वरवाद
↓
सर्वेश्वरवाद (अद्वैतवाद)

हीनोथिज्म ⇒ किसी स्थान विशेष पर विशेष समय एवं परिस्थितियों में कोई एक देवता प्रमुख एवं अन्य देवी-देवता गौण हो जाते हैं।
⇓
मैक्स म्यूलर

उत्तरवैदिक काल (1000 - 600 BC)

→ महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
→ आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विमिश्रीकरण का युग
→ लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरुआत। ["चित्रित धूसर मृद्भाण्ड"]

• राजनैतिक जीवन — राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था

→ क्षेत्रगत साम्राज्यों का उदय प्रारम्भ।
→ राजा का पद पहले की अपेक्षा अधिक गौरवशाली हो गया था।
→ राजा का पद वंशानुगत हो गया था।
→ ऐतरेय ब्राह्मण में राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है।
स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
→ राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे।
→ राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था।
(i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था। 3 दिन तक होता
(ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था।
इस दिन राजा हल चलाता था। अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था।
(iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड़ का आयोजन करवाते थे। राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था।
→ राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी।
→ ऋग्वैदिक काल में राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था। (1/16 वाँ भाग)
→ विदथ का उल्लेख नहीं मिलता।

Notes: महिलाओं का प्रवेश वर्जित

→ सभा एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था।
→ अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है।
→ पांचाल = कबीला = प्रदेश = सर्वाधिक विकसित राज्य
→ राजा की "दैवीय उत्पति का सिध्दांत" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है।

• आर्थिक जीवन

→ कृषि का विकास हो चुका था।
→ अथर्ववेद में "पृथवैन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है।
→ अथर्ववेद में टिड्डियों का उल्लेख मिलता है।
→ शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों का उल्लेख मिलता है। (जुताई, बुआई, कटाई, मड़ाई)
→ शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हल का वर्णन मिलता है।
→ गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसलें थी।
→ पशुपालन भी होता था।
→ वस्तु विनिमय होता था।
→ विनिमय में गाय व निस्क का प्रयोग होता था।
⊛ निस्क – सोने का आभुषण जो गले में पहनते थे।
→ अधिशेष उत्पादन होने लगा। (लोहा – खेत)
→ अन उत्पादक वर्ग – ब्राह्मण व क्षत्रिय
उत्पादक वर्ग – वैश्य व शूद्र
→ अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों में संघर्ष हुआ। अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया।
→ कृषि में लोह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अतंरजीखेड़ा से साक्ष्य)
→ समुद्र का ज्ञान हो गया था। साहित्य में पश्चिमी तथा पूर्वी दोनों प्रकार के समुद्रों का वर्णन मिलता है। व्यापार व वाणिज्य का संकेत
→ स्वर्ण, कांसे के अलावा टिन, तांबा, चाँदी, कच्ची धातु से भी परिचित हो गये थे।
→ वस्त्र निर्माण व धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बड़े पैमाने पर।

• सामाजिक जीवन

→ पितृसतात्मक संयुक्त परिवार
→ चार वर्णों में समाज विभक्त हो गया था। किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था।
→ ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था।
आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे।
(जनेऊ धारण करते) - उपनयन संस्कार होता था।
(*) द्विज – दो बार जन्म लेने वाला
→ शूद्रों को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था।
→ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आयी।
(बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है।)
→ अथर्ववेद में पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है।
→ ऐतरेय ब्राह्मण में भी ,, ,, ,, ,, (पुत्री – कृपण कहा)
→ मैत्रायणी संहिता में भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है।
→ महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था। Ex - गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
→ ,, ,, सम्पति ,, ,, ।
→ विधवा विवाह का प्रचलन था हालाँकि समाज में इसे बुरा माना जाने लगा था।
→ नियोग प्रथा का प्रचलन भी।
→ सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था।
→ बहुपत्नी विवाह का प्रचलन भी था।
→ घरेलू दासों का प्रयोग होता था।
→ जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों का विवरण मिलता है।

• धार्मिक स्थिति

→ बहुदेववाद का प्रचलन था। सर्वेश्वर वाद में भी विश्वास रखते थे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

→ मंदिरों के साक्ष्य नहीं
→ यज्ञ अनुष्ठान अत्यधिक जटिल हो गये थे केवल विद्वान ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही यज्ञ कर सकते थे।
→ प्रमुख देवता - ब्रह्मा, विष्णु, महेश
→ पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।
(i) ब्रह्म यज्ञ (ii) देव यज्ञ (iii) अतिथि यज्ञ (iv) पितृ यज्ञ (v) भूत यज्ञ।
→ ब्रह्म यज्ञ को "ऋषि यज्ञ", अतिथि यज्ञ को "मनुष्य यज्ञ" भी कहते थे। (भूत यज्ञ - प्राणी जगत व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)
→ 3 ऋण - (i) ऋषि ऋण
(ii) देव ऋण
(iii) पितृ ऋण
→ ब्राह्मणों के एक वर्ग ने इस जटिल कर्मकाण्डिय व्यवस्था का विरोध किया एवं ज्ञान पर विशेष बल दिया।

• भौगोलिक स्थिति

→ गंगा-यमुना दोआब में आर्य संस्कृति का प्रसार हुआ।
→ शतपथ ब्राह्मण - राजा विदेध माधव ने पुरोहित गौतम राहुगुणा को साथ लिया एवं सदानिरा नदी तक के सभी जंगलो को (मुँह में अग्नि धारण की) जला दिया।
अनार्य शासक (मगध का) को "व्रात्य" कहा गया है। इसका शुद्धिकरण करके इसको आर्य बनाया गया है।
→ मुजमंत के अतिरिक्त 3 अन्य पर्वतमालाओं का उल्लेख मिलता है।

Teacher's Signature ....

Toppersnotes
Unleash the topper in you

बौद्ध धर्म

→ संस्थापक - गौतम बुद्ध
जन्म - 563 B.C.
पिता - शुद्धोधन
माता - महामाया
मौसी - प्रजापति गौतमी
पत्नी - यशोधरा
पुत्र - राहुल
जन्मस्थान - लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
आधुनिक - रुम्मिनदेई, नेपाल
वंश - इक्ष्वाकु
शाक्य क्षत्रिय
गौत्र - गौतम

→ कौण्डिनय ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की कि सिध्दार्थ बड़ा होकर चक्रवर्ती सम्राट या साधु बनेगा।
→ 4 घटनाएँ जिन्होंने बुध्द का जीवन बदल दिया -
(i) वृध्द व्यक्ति (ii) बीमार व्यक्ति (iii) मृत व्यक्ति (iv) संयासी
→ 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग किया, यह घटना "महाभिनिष्क्रमण" कहलाती है।
→ 'आलार कलाम' के आश्रम में रहकर सांख्य दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया।
→ "रामपुत्त" - दूसरे गुरु। (रूद्रक रामपुत्र)
→ कौण्डिनय आदि ब्राह्मणों के साथ कठिन तपस्या की।
→ "सुजाता" नामक लड़की ने बुध्द को खीर खिलाई।
→ बुध्द ने "मध्यम मार्ग" का प्रतिपादन किया।
→ बुध्द उरुवेला चले गये एवं वहाँ निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई।
उरुवेला ⟷ बौद्ध गया
→ अब सिध्दार्थ "गौतम बुध्द व शाक्य मुनि" के नाम से प्रसिध्द हुये।